Marking Scheme

BSEH Practice Paper (March-2024)

CLASS: 10th (Secondary) (Maximum Marks: 20) **Code: B**

हिंदुस्तानी संगीत गायन

(Hindustani Music Vocal)

खंड (1) वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न

Section (1) Objective type questions

(½ **X 10 = 05**)

....

प्र01 रूपक ताल में कितनी मात्राएं होती हैं? ½

उ0 **(B)** 06

प्र02 एक ताल में कितनी मात्राएं होती हैं? ½

उ0 **(C)** 12

प्र0 3 चौताल में ....मात्राएं होती हैं? ½

उ0 12 मात्रा

प्र0 4 दो गुण में प्रत्येक मात्रा के नीचे .... बोल आते हैं। ½

उ0 दो बोल

प्र0 5 अभिकथन **(A):** किसी ताल में लगने वाले समय के एक भाग को मात्रा कहते हैं। ½

कारण **(R):** सभी तालें अलग–अलग मात्राओं की हो सकती हैं।

उ0 **(A) A** और **R** दोनों सत्य हैं तथा **R**, **A** की सही व्याख्या है।

प्र0 6 अभिकथन **(A):** रूपक ताल में 12 मात्राएं होती हैं। ½

कारण **(R):** रूपक ताल में पाँच विभाग होते हैं।

उ0 **(B) A** और **R** दोनों असत्य हैं तथा **R**, **A** की सही व्याख्या नहीं है।

प्र0 7 ½

कॉलम – 01	कॉलम – 02
A. रूपक ताल में पहली मात्रा पर क्या आता है।	1. पहली मात्रा पर
B. रूपक ताल में खाली चिह्न आता है।	2. 6वीं मात्रा पर
C. रूपक ताल में दूसरी ताली चिह्न आता है।	3. 3
D. रूपक ताल में विभाग होते हैं।	4. खाली

उ0 (4) **A-4 B-1 C-2 D-1**

Download from www.MsEducationTv.com

प्र0 8

कॉलम – 01	कॉलम – 02
A. एक ताल में कितने विभाग हैं।	1. 06
B. चौताल में कितने विभाग हैं।	2. 03
C. रूपक ताल में कितने विभाग हैं।	3. **04**
D. एक ताल में ताली कितनी हैं।	4. 06

½

उ0 **(4) A-4 B-1 C-2 D-3**

प्र0 9 सम पर हाथ हवा में दिखाया जाता हैं। (सही /गलत) ½

उ0 गलत

प्र0 10 किसी ताल में खाली के चिह्न पर ताली दो बार बजाई जाती हैं। (सही/गलत) ½

उ0 गलत

खंड (2) अति लघुउत्तरात्मक प्रकार के प्रश्न

Section (2) Very short answer type questions

(½ **X 08 = 04**)

प्र0 11 राग भीमप्लासी का थाट का नाम बताएं? ½

उ0 काफी

प्र0 12 उत्तरी भारतीय संगीत में किसकी स्वरलिपि पद्वति अधिक प्रचलित हैं? ½

उ0 पं0 विष्णु नारायण भातखण्ड़े जी

प्र0 13 रूपक ताल में कितनी मात्राएं होती है? ½

उ0 07

प्र0 14 एक ताल में कितनी मात्राएं हैं? ½

उ0 12

प्र0 15 चौताल में कितने विभाग होते हैं। ½

उ0 06

प्र0 16 उत्तरी भारतीय संगीत मे विभाग का क्या चिह्न हैं। ½

उ0 (|) मात्राओं के बीच एक लम्बी रेखा।

प्र0 17 उत्तरी भारतीय संगीत मे ताली का क्या चिह्न है? ½

Download from www.MsEducationTv.com

उ0 2,3,4

प्र0 18 उत्तरी भारतीय संगीत मे तार सप्तक के स्वरों के क्या चिह्न हैं ? ½

उ0 स्वरों के ऊपर बिन्दु

खंड (3) लघुउत्तरात्मक प्रकार के प्रश्न

Section (3) short answer type questions

(2 X 03 = 06)

प्र0 19 पं जसराज के जीवन परिचय बारे वर्णन करें। 2

उ0 पं जसराज के जन्म व निधन तिथि के साथ उनके जन्म स्थान, माता–पिता और उनकी गायकी के बारे में बताने पर पूरे अंक दिये जायें।

पं. जसराज का जन्म 20 जनवरी 1930 को हिसार में हुआ। संगीत इनको विरासत से मिला हुआ था। ये कश्मीर राज्य के दरबारी गायक पं. मोतीराम के पुत्र थे। संगीत इनको विरासत में मिला हुआ था। सन् 1934 में इनके पिता का देहांत हो गया तो परिवार का संपूर्ण भार इनके सबसे बडें भाई पंडित मणिराम घराने के श्रेष्ठ गायक थे। अतः इन्होनें अपने मंझले भाई पंडित प्रताप नारायण को गायन और चार–वर्षीय जसराज को तबले की शिक्षा देना प्रांरभ कर दिया। जसराज जल्दी ही तबले मे निपुण हो गए ओर पंडित मणिराम के गायन के साथ तबला संगति करने के लिए संगीत–समाराहों मे जाने लगे। लेकिन बाद में उनकी रूची गायन में अधिक हो गई। जब पंडित मणिराम को इस बात का पता लगा तो विशाल दृष्टिकोण अपनाते हुए उन्होनें पुत्र सम्मान जसराज को गायन की शिक्षा देना आरम्भ कर दिया। सन 1950 में जसराज आकाशवाणी पर अपना कार्यक्रम देने के अलावा अपने गुरू तथा बड़े भाई पं. मणिराम के साथ संगीत सम्मेलनों में गायन की जुगलबंदी भी प्रस्तुत करने लगे। पं. जसराज का विवाह प्रसिद्ध फिल्म निर्माता–निर्देशक शांतराम की पुत्री मथुरा के साथ हुआ। ये सन् 1963 में स्थायी रूप से बम्बई जाकर बस गए। इनका निधन 17 अगस्त 2020 में हुआ जिससे संगीत जगत् को बहुत बडी हानि हुई।

(अथवा)

(OR)

प्र0 19 किशोरी अमोनकर के जीवन परिचय बारे वर्णन करें।

उ0 किशोरी अमोनकर के जन्म व निधन तिथि के साथ उनके जन्म स्थान, माता–पिता और उनकी गायकी के बारे में बताने पर पूरे अंक दिये जायें।

किशारी अमोनकर एक प्रमुख भारतीय शास्त्रीय गायिका थी। हिन्दुस्तानी परम्परा में अग्रणी गायिकाओं में से एक माना जाता है। किशोरी अमोनकर जी का जन्म 10 अप्रैल 1932 को मुबई में हुआ। किशोरी अमोनकर को हिन्दुस्तानी संगीत की अग्रणी गायिकाओं में से एक माना जाता है। अमोनकर ने अपनी माता से ठुमरी, ख्याल और भजनों की शास्त्रीय संगीत की शिक्षा हासिल की। अमोनकर की माता जानी–मानी गायिका मोधुबाई कुर्दीकर थी। उन्होनें जयपुर घराने के दिग्गज गायक अल्लादिया खान साहब से प्रशिक्षण हासिल किया। अपनी माँ से जयपुर घराने की तकनी और बारीकियों को सीखने के दौरान अमोनकर ने अपनी खुद की शैली विकसित की। जिस पर अन्य घरानों का प्रभाव भी दिखता है। उन्हें मुख्य रूप से ख्याल गायकी के लिए जाना जाता है। उन्होनें ठुमरी, भजन और भक्ति गीत और फिल्मी गाने भी गाए। सन् 1960 से 70 के दशक में शास्त्रीय गायिका के रूप में अमोनकर का कैरियर बढ़ गया। इन्हें आई टीसी संगीत पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कला के क्षेत्र में योग्यता के लिए इन्हें 1985 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 2009 संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप, 1987 में पदम भूषण व 2002 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

Download from www.MsEducationTv.com

मशहूर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायिका किशोरी अमोनकर का 03 अप्रैल 2017 को मुबई में निधन हो गया। वह 84 वर्ष की थी।

प्र0 20 संगीत ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' के विभिन्न अध्यायों बारे बताए। 2

उ0 संगीत ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' के मुख्य 36 अध्यायों में से संगीत उपयोगी छः अध्यायों के बारे में बताने पर पूरे अंक दिये जाये।

चौथी शताब्दी के लगभग भरतमुनि ने नाटयशास्त्र नामक ग्रन्थ लिखा। संगीत के इतिहास में यह पहला ऐसा ग्रन्थ है, जिसके अन्तिम छः अध्यायों में संगीत सम्बन्धी महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अन्तर्गत वर्णित अधिकांश तथ्य आज भी शत–प्रतिशत सही माने जाते हैं। नाट्य शास्त्र के 28वें अध्याय में वाद्यों के प्रकार श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, जाति–भेद तथा उनके लक्षण ग्रह, अंश, न्याय, उपन्यास, अलपत्व, बहुत्व, षाडवत्व, औडवत्व आदि पर प्रकाश डाला गया है। 29वें अध्याय में वीणा, उनकी वादन–विधि जातियों के रसानुकूल प्रयोग का विवरण है। 30वें अध्याय में सुषिर वाद्यों का विवरण, 31वें अध्याय में कला, लय और विभिन्न तालों का विवरण दिया गया हैं। 32वें अध्याय में गायक–वादक के गुण ध्रव के 5 भेद, छनद आदि तथा 33वें अध्याय में अवनद्ध वाद्यों की उत्पति, भेद, वादन–विधि, वादकों के लक्षण आदि दिए गए है। इस प्रकार इन 06 अध्यायों में संगीत सम्बधीं जानकारी पूर्ण रूप से प्राप्त करवाने में संगीत ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' की बहुत महत्वता है।

प्र0 21 तानपूरे के अर्थ को परिभाषित करें। 2

उ0 तानपूरा किस विधा में प्रयोग किया जाता है तथा तानपूरा क्या होता है के बारें में पूरा वर्णन करने पर पूरे अंक दिये जाये।

तानपूरा गायकों की सहायता का एक महत्वपूर्ण वाद्य है। इसमें किसी गाने की सरगम आदि नहीं निकलती। संगीत इसका प्रयोग केवल स्वर देने के लिए ही किया जाता हैं। तानपूरे में कुल चार तार लगी होती है। जिस राग में प स्वर लगा हो तो तानपूरा के चारों तारों में से पहली तार मंद्र सप्तक प, दूसरी व तीसरी तार जिसे जोडे की तार कहते है, मध्य सप्तक के सा स्वर से और अतिंम चौथी तार मंद्र सप्तक के सा़ से मिलाई जाती है। जिस राग में पंचम स्वर वर्जित होता है तो फिर पहला तार मध्यम 'म' से मिलाया जाता है। स्त्रियों के तानपूरे का पहला तार फौलादी लोहे का होता है जिसे मध्यम सप्तक के पंचम स्वर से मिलाया जाता है तथा पुरूषों के तानपूरे का पहला तार पीतल का बना होता है।

खंड (4) दीर्घ उत्तरात्मक प्रकार के प्रश्न

Section (4) Long answer type questions

(2½ X 2 = 05)

प्र0 22 राग खमाज का शास्त्रीय परिचय लिखें और राग खमाज का छोटे ख्याल को स्वरलिपिबद्ध करें।
(2½ + 2½) = 05

उ0 शास्त्रीय परिचय में थाट, गायन समय, जाति, वादी–संवादी, आरोह–अवरोह, पकड आदि के स्वर बताने पर पूरे अंक दिये जायें और पाठ्यक्रम में दिये गए छोटे ख्याल की स्वरलिपि में स्थाई व अंतरा लिखने पर पूरे अंक दिये जायें।

राग खमाज

थाट : खमाज,

Download from www.MsEducationTv.com

जातिः षाडव–सम्पूर्ण

वादीः गधांर (ग)

संवादी : निषाद (नि)

आरोहः सा ग म प ध नि सां।

अवरोहः सां नि ध प म ग रे सा।

पकड़ : नि ध मपध, मग

गायन समय : रात्रि का दूसरा प्रहर।

(अथवा)

(OR)

चौताल का एक व दो गुन लिखें।

चौताल का एक गुन

चिहन	X		0		2		0		3		4	
मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बेल	धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन

चौताल का दो गुन

चिहन	X		0		2		0		3		4	
मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बेल	धाधा	दिंता	किटधा	दिंता	तिटकत	गदिगन	धाधा	दिंता	किटधा	दिंता	तिटकत	गदिगन

नोट – दो गुन में सभी दो दो बोलो के नीचे अर्द्धचंद्र।

Download from www.MsEducationTv.com